ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-2*March- 2018
Innovation The Research Concept

सवाई माधोपुर जिले में नगरीकरण की प्रवृत्ति

दीपेन्द्र सिंह मीना
शोधार्थी,
भूगोल विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान

सारांश

विगत कुछ दशकों में नगरीय जनसंख्या तीव्र गति से बढ रही है, इसका सीधा प्रभाव नगरीकरण पर पड़ा है। वर्तमान समय की महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक घटना नगरीकरण की भी है। विगत कुछ दशकों में नगरीय जनसंख्या तीव्र गति से बढना तथा नगरों की संख्या में होने वाली बढोतरी वर्तमान युग का महत्वपूर्ण तथ्य है। नगरीकरण विकास की प्रक्रिया का ही एक अंग हैं। राजस्थान में नगरीकरण में हो रहे तीव्रगामी परिवर्तनों से सवाई माधोपुर जिला भी अछूता नहीं है। स्पष्टतः जिले में नगरीकरण के विकास में आशातीत वृद्धि हुई है। अतः प्रस्तुत शोध–पत्र में नगरीय प्रवृति का अध्ययन एवं भौगोलिक परिप्रेक्ष्य में नगरीकरण की विवेचना करने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द : नगरीकरण, नगरीय जनसूचकांक, सामाजिक प्रदूषण।

प्रस्तावना

नगरीकरण शब्द की उत्पति 'नगर' शब्द से हुई है। यह उस प्रक्रिया की ओर संकेत करती है जिसके माध्यम से ग्रामीण जनसंख्या व अधिवासों का नगरों के रूप में परिवर्तन होता है। वस्तुतः नगरीकरण का अर्थ नगर जीवन अथवा नगरीयता के विकास में सम्बंध है। भारत में नगरीकरण की प्रवृति पांच हजार वर्ष पुरानी है। सिंधु घाटी की हडप्पा व मोहनजोदडों की सभ्यताएँ बडे व स्थापित नगर होने के संकेत देती है। आज का युग नगरों के विकास का युग है। आधुनिक जीवन का आधार नगर एवं उसमें विकसित जीवन प्रणाली है। वर्तमान युग में नगरों ने जिस प्रकार की नवीन् जीवन प्रणाली एवं गतिविधियों को जन्म दिया है, वे उसके कारण स्वयं आकर्षण के केन्द्र बिन्दु सिद्ध हुए है। नगरीकरण का विकास उस दिशा में कहा जा सकता है कि नगरों की कुल जनसंख्या में उत्तरोतर वृद्धि हो रही हो। जनगणना 2011 के अनुसार भारत की कुल जनसंख्या का 31.16 प्रतिशत भाग नगरों में रहा है। सवाई माधोपुर जिले में राज्य की कुल नगरीय जनसंख्या का 1.56 प्रतिशत भाग निवास करता है।

अध्ययन क्षेत्र

राजस्थान राज्य के दक्षिण–पूर्वी भाग में स्थित सवाई माधोपुर जिला $25^{0}45'$ से $26^{0}41'$ उत्तरी अक्षांश एवं $75^{0}59'$ से $77^{0}23'$ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। जिले की सम्पूर्ण सीमा स्थलीय है जो कि उत्तर में दौसा, उत्तर–पूर्व में करौली, उत्तर–पश्चिम में जयपुर, दक्षिण–पूर्व में कोटा, दक्षिण में बूंदी व पश्चिम में टोंक स्थित है। चम्बल नदी इसकी पूर्वी सीमा बनाती है जो मध्य प्रदेश को राजस्थान राज्य से अलग करती है। जिले का क्षेत्रफल 5042 वर्ग किमी. है जो राजस्थान के कुल क्षेत्रफल के 1.48 प्रतिशत भाग पर फैला है। जिले में 8 उपखण्ड, 8 तहसीले व 6 पंचायत समितियाँ है। परन्तु 2011 की जनगणना के समय जिला 7 तहसीलों मे विभक्त था अतः इसी आधार पर अध्ययन प्रस्तुत है।

ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-2*March- 2018
Innovation The Research Concept

मानचित्र

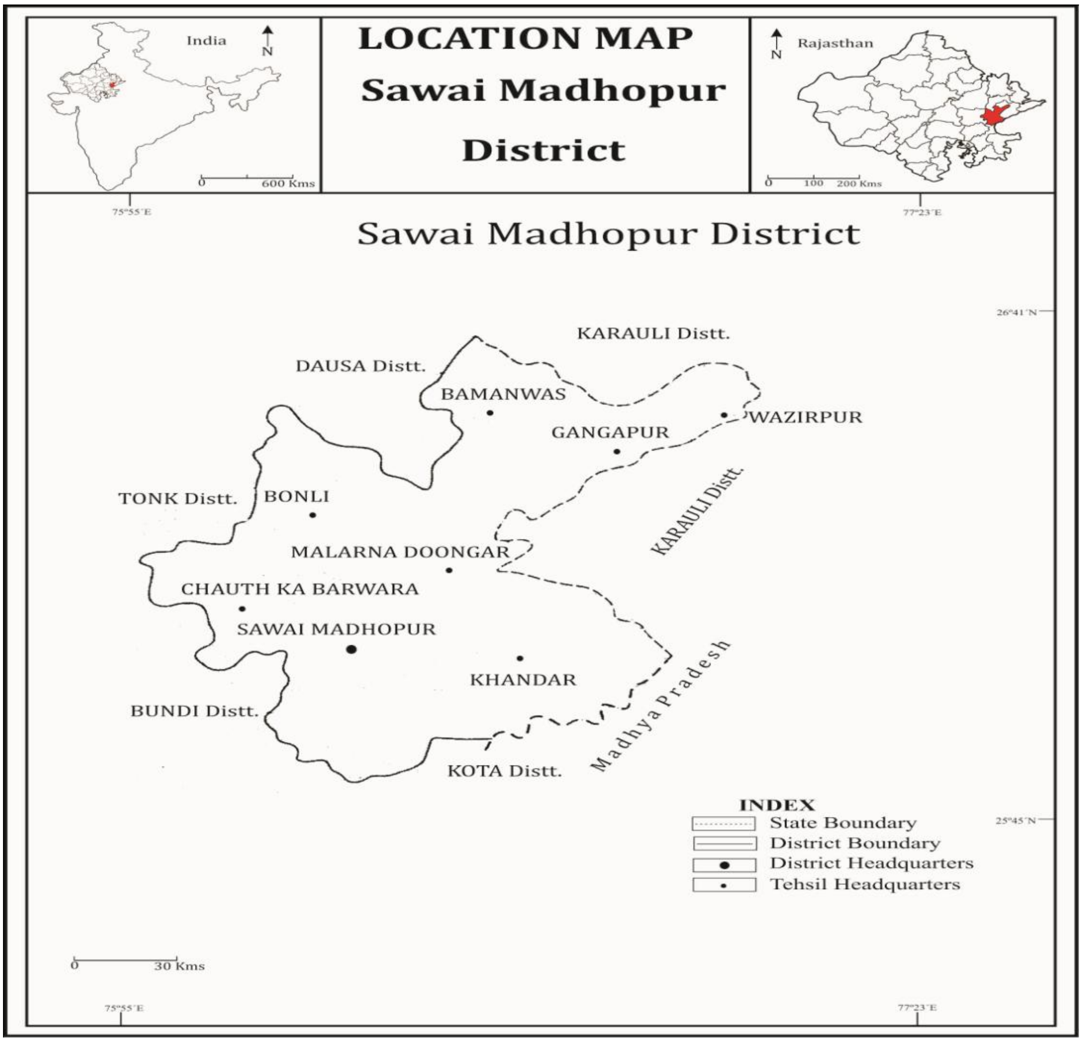

विधि तंत्र

राजस्थान एवं सवाई माधोपुर में नगरीकरण की प्रवृति

सारणी–1 के अनुसार 1961 की जनगणना में राजस्थान राज्य की नगरीय जनसंख्या का 16.28 प्रतिशत था जो बढकर 1971 में 17.63 प्रतिशत, 1981 में 21.05 प्रतिशत, 1991 में 22.88 प्रतिशत, 2001 में 23.39 प्रतिशत और 2011 में 24.87 प्रतिशत हो गया। इस प्रकार 1961–2011 की अवधि में इसमें 8.59 प्रतिशत की वृद्धि हुई। अगर हम जिले की नगरीकरण की प्रवृति पर गौर करे तो सवाई माधोपुर जिले की नगरीय जनसंख्या 1951–1961 में 10.19 प्रतिशत, 1961–71 के दशक में 11. 90 प्रतिशत थी जो बढकर 1971–81 में 13.42 प्रतिशत, 1981–91 में 14.84 प्रतिशत, 1991–01 में 19.04 प्रतिशत तथा 2001–11 में 19.95 प्रतिशत हो गई। 2001–11 के बीच नगरीय जनसंख्या मात्र 0.91 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। इसका कारण सवाई माधोपुर जिले का विभाजन रहा है। 1961–2011 के बीच जिले की नगरीय जनसंख्या में 9.76 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। सवाई माधोपुर जिले में नगरीकरण की प्रवृति राज्य की तुलना में अधिक है।

सारणी –1 राजस्थान एवं सवाई माधोपुर में नगरीकरण की प्रवृति

जनगणना वर्ष	राजस्थान		सवाई माधोपुर	
	नगरीय जनसंख्या	दशकीय वृद्धि दर	नगरीय जनसंख्या	दशकीय वृद्धि दर
1961	16.28	–	10.19	–
1971	17.63	38.47	11.90	47.80
1981	21.05	58.69	13.42	45.04
1991	22.88	39.62	14.82	41.33
2001	23.39	31.26	19.04	26.99
2011	24.87	29.00	19.95	25.31

जिले में नगरीय जनसंख्या वृद्धि

एक निश्चित अवधि में किसी स्थान विशेष की जनसंख्या में होने वाले मात्रात्मक परिवर्तन को जनसंख्या परिवर्तन या जनसंख्या वृद्धि कहते है। जनसंख्या वृद्धि में या तो धनात्मक परिवर्तन होता है या ऋणात्मक परिवर्तन।

जनसंख्या परिवर्तन के आंकलन का सूत्र :–

सारणी –2 से स्पष्ट है कि 1961 में नगरीय जनसंख्या 0. 96 लाख थी जो 2011 में बढकर 2.66 लाख हो गई इस

प्रकार 1961 से 2011 के मध्य जिले की कुल नगरीय जनसंख्या में 1.70 लाख की वृद्धि हुई। वहीं दूसरी ओर जिले की कुल जनसंख्या में 50 वर्षों में 3.92 लाख की बढोतरी हुई। जिले की शहरी जनवृद्धि दर 1961–71 के दशक में 47.80 प्रतिशत थी जो 1971–81 से घटकर 45.04 प्रतिशत तथा 1981–91 में 41.33 प्रतिशत रह गई। 2001 से 2011 में क्रमशः 26.09 प्रतिशत, 25.31 प्रतिशत देखी गई, इस भारी गिरावट का कारण जिले का विभाजन तथा सरकार द्वारा चलाये जा रहे रोजगार कार्यक्रम थे। नगरीय जनसंख्या की वृद्धि की प्रवृत्ति में पर्याप्त भिन्नता देखने को मिलती है। इस प्रकार जिले की अखिल राजस्थान नगरीय जन वृद्धि दरों से तुलना करने पर यह स्पष्ट कि यह राज्य के औसत से अधिक है। इस प्रकार सवाई माधोपुर जिले में नगरीकरण की प्रवृति आशातीत परिवर्तन हो रहे है। नगरीय जनसंख्या वृद्धि के कई कारण जिनमें मुख्य है– गांवों से नगरों की ओर जनसंख्या का स्थानान्तरण। एक अन्य कारण नगरीय जनसंख्या की प्राकृतिक वृद्धि। बढते नगरीकरण के फलस्वरूप जिले के नगरीय केन्द्रों में अनेक समस्याएं उत्पन्न होने लगी है।

सारणी – 2 जिले में नगरीय जनसंख्या : वृद्धि एवं प्रतिशत (1961–2011)

जनसंख्या वर्ष	कुल जनसंख्या	दशकीय अन्तर	नगरीय जनसंख्या	दशकीय अन्तर	नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत
1961	943574	–	96129	–	10.19
1971	1193528	26.49	142086	47.80	11.90
1981	1535870	28.68	206090	45.04	13.42
1991	1963246	27.83	291274	41.33	14.84
2001	1117057	27.55	212640	26.99	19.04
2011	1335551	19.56	266467	25.31	19.95

नोट – 2001 में पूर्व करौली जिला भी सम्मिलित था।

ग्राफ –1 जिले में नगरीय जनसंख्या की वृद्धि

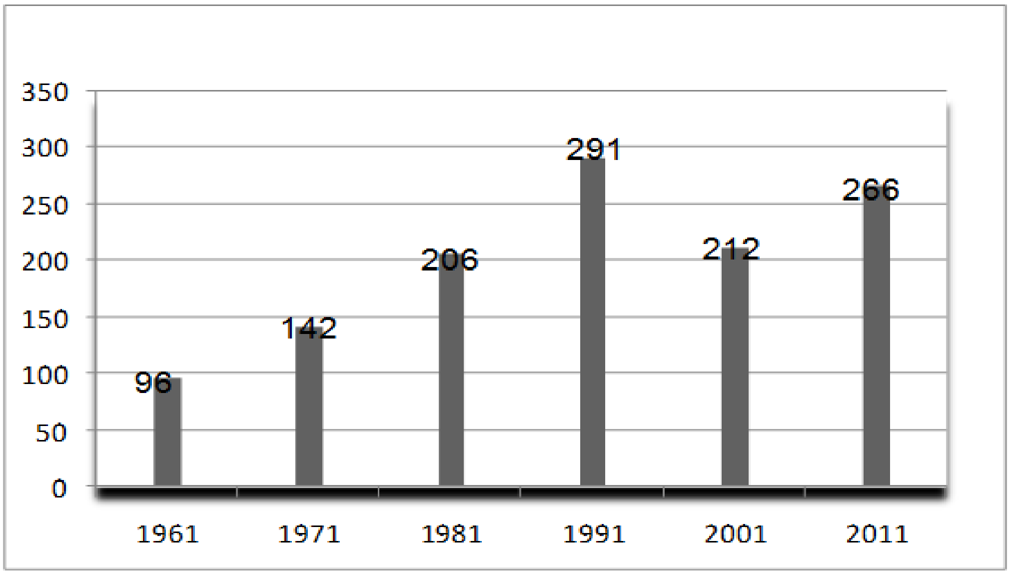

जनगणना

सारणी–3 जिले की नगरीय जनसंख्या का घनत्व, लिंगानुपात एवं साक्षरता

जनसंख्या वर्ष	घनत्व (प्रति वर्ग किमी)	दशकीय अन्तर	लिंगानुपात	दशकीय अन्तर	साक्षरता	दशकीय अन्तर
1961	907	–	872	–	29.33	–
1971	1470	+38.29	866	–0.69	35.61	+17.63
1981	1677	+12.34	867	+0.001	44.09	+19.23
1991	1746	+3.95	852	–1.70	48.32	+8.31
2001	2754	+36.60	889	+4.16	73.32	+34.41
2011	2228	–23.60	894	+0.55	78.97	+7.15

जिले की नगरीय–ग्रामीण जनसंख्या, घनत्व

जनसंख्या वितरण एवं घनत्व एक–दूसरे के प्रतिद्वंदी नहीं अपितु ये दोनों परस्पर सम्बन्धित है। परन्तु दोनों की संकल्पनाये भिन्न है। जनसंख्या वितरण में अधिक बल स्थितिगत एवं जनसंख्या घनत्व में आनुपातिक संबंध पर दिया जाता है। अतः किसी विशेष स्थान पर जनसंख्या का दबाव अधिक है या कम है, इसे जानने के लिए जनसंख्या वितरण व घनत्व का अध्ययन आवश्यक है। अध्ययन क्षेत्र की जनसंख्या वितरण, जनघनत्व को भौतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक इत्यादि कारक प्रभावित करते है, जिसके द्वारा ही विकास प्रक्रिया प्रभावित होती है। सारणी – 4 को देखने से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण और नगरीय जनसंख्या में अत्यधिक अन्तर है। नगरीय जनसंख्या सम्पूर्ण जिले की मात्र तीन तहसीलों

ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-2*March- 2018
Innovation The Research Concept

(गंगापुर, बॉली, सवाई माधोपुर) में निवास करती है। वर्ष 2001 की जनगणना तक जिलें में दो ही तहसीलों (गंगापुर, सवाई माधोपुर) में ही नगरीय जनसंख्या निवास करती थी। वर्ष 2011 की जनगणना में बौली तहसील की कुल जनसंख्या का 10.71 प्रतिशत भाग नगरीय जनसंख्या के रूप में दर्शाया गया है। 2001 की जनगणना के अनुसार जिले की नगरीय जनसंख्या 19.04 प्रतिशत थी। 2011 जनगणना में नगरीय जनसंख्या में 0.91 प्रतिशत वृद्धि दर्ज की गई। सर्वाधिक नगरीकरण गंगापुर सिटी में हुआ है, जिसके विकास की शुरूआत का श्रेय रेलवे का जाता है।

सारणी–4 : जिले की ग्रामीण–नगरीय जनसंख्या, घनत्व (2001–2011)

जिला / तहसील	2001			2011			दशकीय परिवर्तन		
	ग्रामीण जनसंख्या प्रतिशत	नगरीय जनसंख्या प्रतिशत	घनत्व प्रति वर्ग किमी	ग्रामीण जनसंख्या प्रतिशत	नगरीय जनसंख्या प्रतिशत	घनत्व प्रति वर्ग किमी	ग्रामीण जनसंख्या प्रतिशत	नगरीय जनसंख्या प्रतिशत	घनत्व प्रति वर्ग किमी
सवाई माधोपुर जिला	80.96	19.04	27.54	80.05	19.95	35.39	−0.91	+0.91	+785
गंगापुर तह.	62.96	37.04	88.94	62.48	34.52	10.976	−0.48	+0.48	+20.82
बामनवास तह.	100	–	–	–	–	–	–	–	–
मलारना डूंगर तह.	100	–	–	–	–	–	–	–	–
बौंली तह.	100	–	–	89.29	10.71	–	−10.71	+10.71	–
चौथ का बरवाडा तह.	100	–	–	–	–	–	–	–	–
सवाई माधोपुर तह.	61.51	38.49	16.41	63.84	36.16	1853	+2.33	−2.33	+212
खण्डार तह.	100	–	–	–	–	–	–	–	–

नगरीय जनसंख्या के सूचकांक

नगरीय व ग्रामीण क्षेत्रों के भौतिक परिवेश, आर्थिक व्यवस्था, सामाजिक–सांस्कृतिक व्यवस्था राजनीतिक जीवन में बहुत विभिन्नताएं होती है। इन विषमताओं को प्रदर्शित करने हेतु जनघनत्व एक प्रमुख सूचकांक है। उक्त विभिन्नताओं को स्पष्ट करने हेतु नगरीय जनघनत्व का उपयोग किया जाता है। सन् 1961 से 2011 तक के जिले के नगरीय जन घनत्व को सारणी–3 में प्रदर्शित किया गया है। सारणी में स्पष्ट है कि जिले के नगरीय घनत्व में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है। 1961 से 1991 तक नगरीय क्षेत्र में बदलती सामाजिक परिस्थितियों, नगरीय सुविधाओं आदि के कारण ग्रामीण नगरीय प्रवास बढा है।, जिसका नगरीय घनत्व पर सीधा प्रभाव पडा। 1991 से 2011 तक नगरीय क्षेत्रफल में तेजी से वृद्धि हुई साथ ही नगरीय जनघनत्व में सर्वाधिक वृद्धि हुई स्पष्ट है वर्ष 1961 से 2011 तक नगरीय घनत्व में वृद्धि की प्रवृति देखी गयी जो सामान्य नगरीकरण का परिणाम है। जनघनत्व में वृद्धि के फलस्वरूप जिलें में अनियोजित सघन अधिवासों का उद्भव हुआ।

लिगांनुपात का अर्थ किसी जनसंख्या में स्त्रियों और पुरूषों का सगंठन। किसी क्षेत्र की सामाजिक स्थिति तथा अर्थव्यवस्था में स्त्री–पुरूष अनुपात की महत्वपूर्ण भूमिका पायी जाती है। जिले के कई दशकों की नगरीय जनसंख्या के आकडों को देखने से स्पष्ट होता है कि लिगांनुपात स्थिर नही रहा, बल्कि यह परिवर्तनशील रहा। जिले में सबसे कम लिंगानुपात 1991 में प्रति एक हजार पुरूषों पर 852 तथा सबसे अधिक 2011 में प्रति हजार पुरूषों पर 894 स्त्रियों की संख्या रहीं। जो जिले लिगांनुपात 897 से कम है। सारणी–3 का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है, कि नगरीय जनसंख्या का लिगांनुपात तुलनात्मक रूप से काफी कम है। इसका कारण दहेज प्रथा, पुरूष प्रधान समाज आदि कुप्रथाओं को उत्तरदायी माना जा सकता है।

अध्ययन क्षेत्र में 2011 की जनगणना में कुल नगरीय साक्षर 182116 लाख साक्षर व साक्षरता 79.00 प्रतिशत है। वर्ष 1961 की जनगणना के अनुसार नगरीय साक्षरता 29.33 प्रतिशत है। वर्ष 1961 से 2011 तक की नगरीय साक्षरता की दर का अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि विगत 50 वर्षो में साक्षरता की दर में 49.67 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। वर्ष 1971, 1984, 1991 में नगरीय साक्षरता में क्रमशः 35.61, 44.09, 48.32 प्रतिशत रही। 2001–2011 में नगरीय साक्षरता में 5.68 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। जो वर्ष 1991–2001 के दशक की साक्षरता वृद्धि से कम है। जिले के नगरीय क्षेत्रों में शैक्षणिक सुविधाएँ होने के कारण यहाँ साक्षरता दर ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में अधिक है।

निष्कर्ष व सुझाव

नगरीय क्षेत्रीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि यहां नगरीकरण में तहसीलवार विषमता पायी गयी है, जिसका प्रमुख कारण भौगोलिक भूवैन्यायिक तथा नगरीय आधारभूत सुविधाओं का अभाव रहा है। साथ ही जिले की ग्रामीण जनसंख्या का प्रवास जिले के नगरीय केन्द्रों की जगह आसपास के जिलों में अधिक हुआ है। तहसीलों में आधारभूत सुविधाओं का विस्तार तथा रोजगार के साधनों के विकास का प्रयास करना चाहिए। तुलनात्मक रूप से नगरीय जनसंख्या शिक्षा के क्षेत्र में तथा नगरीय लिगांनुपात में पिछडी हुई है। इन नगरीय जनसुचकाकों में

सुधार हेतु शिक्षा के क्षेत्र में तथा स्वास्थय सेवाओं में पर्याप्त सुधार वांछनीय है।

वर्तमान में जिले में नगरीकरण प्रारम्भिक अवस्था में है। नगरीकरण की प्रारम्भिक अवस्था में ही आर्थिक असमानता तथा सामाजिक प्रदूषण (गरीबी, बेरोजगारी, अपराध अत्यादि) जैसी जटिलतम समस्याएँ सामाने आने लगी है। इनके प्रभाव को कम करने के लिए या समाप्त करने के लिए नगरीय केन्द्रों का योजनाबद्ध विकास, उद्योगों व रोजगार को बढ़ावा तथा सरकार को सामाजिक उत्थान सम्बंधी कार्यक्रमों पर बल देने की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *बंसल, सुरेश (2012–13) : नगरीय भूगोल, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ।*
2. *Census of Sawai Madhopur (1961-2011)*
3. *District Statistical outline (2015)*
4. *Ramchandran (2014) : Urbanization and Urban Systems in India.*
5. *गौड़, रचना (2008) : नगर विकास के नये आयाम*
6. *सिंह (2012) : नगरीय भूगोल*
7. *जोशी, रतन : नगरीय भूगोल*
8. *Rao (2014) : Urban planing : theory and Practice*